

## श्री गायत्री चालीसा

॥ दोहा ॥

हीं श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड ।  
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड ॥  
जगत् जननि, मंगल करनि, गायत्री सुखधाम ।  
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम ॥

॥ चालीसा ॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।  
गायत्री नित कलिमल दहनी ॥१॥  
अक्षर चौबिस परम पुनीता ।  
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता ॥

शाशवत सतोगुणी सतरूपा ।

सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥

हंसारूढ सितम्बर धारी ।

स्वर्णकांति शुचि गगन बिहारी ॥४॥

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।

शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥

ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।

सुख उपजत, दुःख दुरमति खोई ॥

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।

निराकार की अदभुत माया ॥

तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।

तरै सकल संकट सों सोई ॥५॥

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।  
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥  
तुम्हरी महिमा पारन पावें ।  
जो शारद शत मुख गुण गावें ॥

चार वेद की मातु पुनीता ।  
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥  
महामंत्र जितने जग माहीं ।  
कोऊ गायत्री सम नाही ॥१२॥

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।  
आलस पाप अविद्या नासै ॥  
सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।  
काल रात्रि वरदा कल्याणी ॥



ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।

तुम सों पावें सुरता तेते ॥

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।

जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥१६॥

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।

जै जै जै त्रिपदा भय हारी ॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।

तुम सम अधिक न जग में आना ॥

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।

तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेषा ॥

जानत तुमहिं, तुमहिं है जाई ।

पारस परसि कुधातु सुहाई ॥२०॥

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई ।

माता तुम सब ठौर समाई ॥

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।

सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥

सकलसृष्टि की प्राण विधाता ।

पालक पोषक नाशक त्राता ॥

मातेश्वरी दया व्रत धारी ।

तुम सन तरे पतकी भारी ॥२४॥

जापर कृपा तुम्हारी होई ।

तापर कृपा करें सब कोई ॥

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें ।

रोगी रोग रहित है जावें ॥

दारिद मिटै कटै सब पीरा ।

नाशै दुःख हरै भव भीरा ॥

गृह कलेश चित चिंता भारी ।

नासै गायत्री भय हारी ॥२८॥

संतिति हीन सुसंतति पावें ।

सुख संपत्ति युत मोद मनावें ॥

भूत पिशाच सबै भय खावें ।

यम के दूत निकट नहिं आवें ॥

जो सधवा सुमिरें चित लाई ।

अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।

विधवा रहें सत्य व्रत धारी ॥३२॥



जयति जयति जगदम्ब भवानी ।

तुम सम और दयालु न दानी ॥

जो सदगुरु सों दीक्षा पावें ।

सो साधन को सफल बनावें ॥

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।

लहैं मनोरथ गृही विरागी ॥

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।

सब समर्थ गायत्री माता ॥३६॥

ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, जोगी ।

आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ॥

जो जो शरण तुम्हारी आवें ।

सो सो मन वांछित फल पावें ॥

बल, बुद्धि, विद्या, शील स्वभाऊ ।

धन वैभव यश तेज उछाऊ ॥

सकल बढें उपजे सुख नाना ।

जो यह पाठ करे धरि ध्याना ॥४०॥

॥ दोहा ॥

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करे जो कोय ।

तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥